भा.कृ.अनु.प.–केंद्रीय मात्स्यिकी शिक्षा संस्थान

पंच मार्ग, ऑफ यारी रोड, अंधेरी वेस्ट, मुंबई 400 061

प्रेस नोट

भा.कृ.अनु.प. - केंद्रीय मात्स्यिकी शिक्षा संस्थान, मुंबई देश में मात्स्यिकी उच्च शिक्षा के क्षेत्र में उत्कृष्टता का केंद्र है। इसे दुनिया का एकमात्र विश्वविद्यालय होने की भी प्रतिष्ठा प्राप्त है जो मत्स्य पालन के 11 अत्यधिक विशिष्ट विषयों में मास्टर और डॉक्टरेट छात्रों को तैयार करता है। इसने मत्स्य पालन क्षेत्र को बढ़ावा देने के लिए कई प्रौद्योगिकियाँ का भी विकास किया है।

भा.कृ.अनु.प. - केंद्रीय मात्स्यिकी शिक्षा संस्थान, मुंबई ने दिनांक 5 अप्रैल 2024 को छात्रों को डिग्री प्रदान करने के लिए अपना **सत्रहवाँ दीक्षांत समारोह** मनाया। इस दीक्षांत समारोह में भा.कृ.अनु.प. –के.मा.शि.सं. के **कुलपति एवं निदेशक डॉ. रविशंकर सी.एन.** ने 90 मास्टर और 32 पीएच.डी. छात्रों को डिग्री प्रदान की।

डॉ.(श्रीमती) एन. कलैसेल्वी, महानिदेशक, वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान परिषद एवं सचिव, विज्ञान एवं औद्योगिक अनुसंधान विभाग, भारत सरकार, समारोह के मुख्य अतिथि तथा **डॉ.आर.सी. अग्रवाल, उप महानिदेशक (शिक्षा), भा.कृ.अनु. प.,नई दिल्ली एवं डॉ. जॉयकृष्ण जेना, उप महानिदेशक (मात्स्यिकी विज्ञान), भा.कृ.अनु.प.,नई दिल्ली विशिष्ट अतिथि** के रूप में उपस्थित थे।

मुख्य अतिथि ने पूरे भारत में 28 मिलियन लोगों को रोजगार देने वाले एक संपन्न और तेजी से उभरते क्षेत्र के मजबूती प्रदान करने में व्यवसायिक मात्स्यिकी शिक्षा की भूमिका की सराहना की। 2022 में 16.24 मिलियन टन मछली के कुल उत्पादन में जलीय कृषि का बढ़ता योगदान इस क्षेत्र में बढ़ती उद्यमशीलता गतिविधि को दर्शाता है। इससे पता चलता है कि प्रभावी प्रौद्योगिकियों को विकसित और लागू किया जा रहा है और भारत दुनिया में मछली का दूसरा सबसे बड़ा उत्पादक बना हुआ है। यह क्षेत्र भारत की जीडीपी में लगभग 1.2% का योगदान देता है, और निर्यात आय 2023 के दौरान रु. 64,000 करोड़ तक पहुंच गई है। पिछले पांच वर्षों में भारत सरकार की प्रधान मंत्री मत्स्य सम्पदा योजना (पीएमएमएसवाई) ने 22 राज्यों और सात केंद्र शासित प्रदेशों के 31.89 लाख मछुआरों और किसानों को बीमा कवरेज दिया है और अतिरिक्त 6.77 लाख मछुआरों को लीन/बैन अवधि के दौरान आजीविका और पोषण संबंधी सहायता के लिए कवर किया है। यह योजना नवाचारों और आधुनिक प्रौद्योगिकी को अपनाने, मछली की सुरक्षा और गुणवत्ता में सुधार, कोल्ड-चेन, फसल के बाद के बुनियादी ढांचे के विकास, आधुनिक मूल्य श्रृंखला और ट्रेसबिलिटी, मत्स्य पालन प्रबंधन के वैज्ञानिक ढांचे और मछुआरों के कल्याण के

माध्यम से फलीभूत हुई है । भारत को दुनिया में गुणवत्तापूर्ण मछली का अग्रणी उत्पादक और उपभोक्ता बनाने की इस परिवर्तनकारी यात्रा में मात्स्यिकी शिक्षा और व्यवसाय की भूमिका महत्वपूर्ण है ।

डॉ. कलैसेल्वी ने अंतर्देशीय लवणीय जलीय कृषि के लिए ऊर्जा-कुशल और पर्यावरण के अनुकूल प्रौद्योगिकियों को विकसित करने में आईसीएआर-सीआईएफई के महत्वपूर्ण योगदान की भी सराहना की। सीआईएफई के निरंतर प्रयासों के परिणामस्वरूप, हरियाणा, पंजाब, राजस्थान और उत्तर प्रदेश में लगभग 2500 किसानों ने राज्य सरकारों की सक्रिय भागीदारी के साथ पी. वन्नामेई झींगा जलीय कृषि को अपनाया है । आजीविका के अवसर पैदा करने के लिए इन राज्यों के मुख्यमंत्रियों द्वारा विशेष रूप से सीआईएफई और रोहतक केंद्र की सराहना की गई है। एक एम. झींगा मोबाइल CIFE के वैज्ञानिकों द्वारा विकसित ऐप इन उद्यमों को डिजिटल सहायता प्रदान करता है।

संस्थान की अन्य पहल, भारतीय कैटफ़िश मागुर और कॉमन कार्प के आनुवंशिक सुधार से संबंधित थी; मछली प्रजनन प्रौद्योगिकियां, जलीय पशु रोगजनकों के लिए टीके, समुद्री भोजन सुरक्षा और गुणवत्ता परीक्षण, गैर-पारंपरिक फ़ीड और न्यूट्रास्यूटिकल्स; तटीय प्रदूषण की निगरानी और निवारण; अपशिष्ट उपयोग; और मूल्यवर्धित मछली उत्पादों का विकास जिसे उन्होंने स्वीकार किया । उन्होंने इस बात की भी सराहना की कि आईसीएआर-सीआईएफई के पूर्व छात्रों ने वैज्ञानिक, नीति निर्माताओं,उद्यमी के रूप में भारत और विदेश दोनों में महान ऊंचाइयां हासिल की हैं।

उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि दुनिया को 2050 तक अधिक भोजन की आवश्यकता है । इसलिए, मत्स्य पालन अनुसंधान और शिक्षा महत्वपूर्ण होगी । उन्होंने मछली पालन का विस्तार, उत्पादकता बढ़ाने, विपणन में सुधार और फसल के बाद के नुकसान को कम करके जलीय भोजन के उत्पादन और खपत को बढ़ाने के लिए नवीन अनुसंधान और विस्तार कार्यक्रमों की आवश्यकता को भी रेखांकित किया ।

उन्होंने उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले और पदक जीतने वाले छात्रों को बधाई दी और सीआईएफई से उच्च शिक्षा के क्षेत्र में अपना कद बनाए रखने और बढ़ाने का आग्रह किया।